TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4484**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥६०॥ पहिलुं सरसति पाय नमी । त्राए दी मन सुद्धि । पुण्य प्रबंध भणुं मति लिसु चोपई निरमल मति ॥१॥ पुण्य
तणां फल सांभलु । दीयइ राज ऋद्धि सात । एक मनां आराधतो । टालइ भव दुख ताप ॥२॥ दान सील तप भावना
किणनां फल उत्तम । कवण नाम लीला लहइ मन कहइ सभ उपइ हर्षि मन मां ॥३॥ जे पालइ मन सुद्ध सित । सुधी छि
णवर्त्तीया । सील रतन परिचिन्ह लहइ । तेन रच्युं रास मुंगणि ॥४॥ सालंस विसुमसंपजइ । सालि तिरमल तु
धि । ज्ञानि लिइं तप भवियलइ खलहइ । पामइ इ सार सिद्धि ॥५॥ पंच इ इ दानि गुहइ । विमल सहइ मंत्रांणि । मनव
चनि कायाकरी सेसारइ अप्पाण ॥६॥ आगलि संभानाराकला सद जिंइ पुरुष पूसीए । पुरुष मानइ कदिन मैते
सुधरमतीता ॥७॥ चउपई ॥ सालमद्रा वुत पाल इ जेह । मण तिरीमणि कहा दलतइ । तेह सुधरहार इ जाइ पाप
तेमनतणा सनिहितलइ तेला ॥८॥ पुन तणां मुक्ति आकथांन कि सार । पुण्य विसइ लिला सांग गुंभीर ॥ सकला
लोक रीते इकान तलिं । मिहलीमेनानहतणउंआमनु ॥९॥ जंबूद्वीप लोहइ नगिसार । तस मध्य क्त इ तास मक्ता
रि ॥ भ ने णानयरा जीणाइ । अति दिहि पिलेव धांणाइ ॥१०॥ चक्र तेव उराम नीरा उ लि । उपइ अतिदल तिहां रघम पो
लि गढ मंदिर दिरघा तइ सार । लिवायइ निहंल तिरघ द्वार ॥११॥ कि तणा लिपि आलविमाल । पूजइ चइ ति
हां नव रंगाणि लां । वाइ जेह गहिरा लि हांनसांणा । तेहि खानइ राजइ सुंणा ॥१२॥ निवसइ जन्या राश्रति पण । पुण्यवंत
नामहां तिहां सुणा । निवसंद वे उपना तिहां को कि । नयरमांहि ऐके कोकि ॥१३॥ व्यवहारी याचा सद धनवंत । भोगे
क दिन इ सिपुण्यवंत । मन सुधि ते पालइ सीलइ । ताससमां कर इति दालो लन ॥१४॥ धान कि रजो तिणधण
मान मेद्धानइ तिहं व्याप एं । वाविसरोवरमनइ । आराम दासइ विवध गिरुआ चिंतांम ॥१५॥ इक थान कि तिहां
णारहइ । इक बइ काकणां निलक सइ । इक हणवीवसोसीसार । नयरीमाहि सुवनआ पारि ॥१६॥ नयरा
राजसी
रतिसुं
दरीनं
मा
वरि सिव समान । तेन गले नायर संजाइसा । रूपिइ रंता भण तिसा ॥१७॥ सरिसी वहु गुण धाम । नयण चपलम
इ सुहु पाय धा । कांकाक नमदिकी इंडपुमाण । मोलतां कोलत की ति सुबांण ॥१८॥ वेणि सरल दो मइ अति सार । कांना
सोवन नी धार । अधर रंग परवाला पजि स्या । वाशरू बकइ दंते जिस्या ॥१९॥ अनो पम सोहइ मुक्त नुटंक । भोणक
रि कणी दीपगचइ इ । कंठि अनोपम सोहइ सार । पाए ने उर रणं कणकार ॥२०॥ पहिरइ पटउला नवरंग । कं 1
चु अ सोहइ अति दिसुं चंग । दाव मात निउ करतां नारि । इसी रमणि न थी संसारि ॥२१॥ कविक दिवसे नंदके उक
रू । विपुल निरूपतणउ उछरू । तस आंगि आरि विसुद्धि विचार । तासनाम ललितांग कुमार ॥२२॥ रूपि रूअडउ अ
तिगुणवंत । जांण तिरीम सिलोलक रंत । सोतां मलिजे अति सुविचार । भाणे कहइ न अवतार ॥२३॥ आयुधलक्ष्मी स

नलतकु
मार॥

इव्रजामी। सकल शास्त्र मांणइ मर्म। अतिसुरूनइ हइ सन्मांन। जिहां जाइ तिहां लहि बहुमांन। २४ दांन
सूरि तेहनु अतिभणउ। सूरसुजस माहि वखांणइ। दांन दियतां न करइ खंच। राजा वारइ बहु अप्रपंच। २५ राइ
दाखिण का लिहार। याचकनइ दाधउ तिणि वार। तेमणा राइ मन जित कोय। आणतणउ मुरूकावउ लोय। २६
नगर माहि मन रंगि इ रमइ। जिहां मन मांनइ तिहां तिहां भमइ। कुणाणक कउ नउ रहइ वयेठइ। कुबलइ व
रुइन विकरइ। २८। मइलइ साधरि रोताबाल। वरु नांन करइ संभाल। कामिका दिउनगइ मरलेइ कुज
रथाव लिहोलां मिलइ। २९। सरू पयुरु घटेखानइ नारि। कामिपाभायइ अपार। शास्त्रइ जिपरि बोलइ तेय
मिलानसा। ३१॥ चोपई। घरे जि मतां मेहलानरतार। पासे वानां नकरइ सार। रूपि बिबु लखाइ नारि कुंयर
नइ देषाति बाणि रि। ३२। नारी थाइ कामि अंधा विणसाइ तेय रतुबंध। कामातुर नावइ। नबदोइ। अवरकर
नव बोइइ तोइ। ३३। दूहा॥ रिषि अचा साले रूपाताथिक राते धार। कामि तेहु अति नमा। जे पणबावनबार। ३४ धन
दि वेणमुनि नामांइ। गिरुआ अति सुचा थिर। वेशाम दिरते रहिउ। मेलिउ संयमलआचार। ३५। इं णिकंहर्षिइ सं
ये नागजाइ मरिकोइ। कलाउ कांक विकहइ। हइ इ विचारामांइ। ३६। कइमस बल्लम भिमांणइ। अति विक्रम
समण एकसोल सहि सिउ बिलमइ। पणि गोल णिम रसिउ नेर। ३७। इदबेइ गोविंद में। पणाइस नाव्यां णा। कामि
दकेहन तेहया तेन रत्वरास मुजाण। ३८॥ चोपई॥ कदपविणसाडइ सविकाम। मात पिता नइ आणइ लाज गा
गल माटे षाठ इलोइ। जे गमां हि हारा रयकोइ। ३९। पर स्त्री गम निलागइ पाप। पब्बेइ पर तन वसुमनाप वे परना
गमगति करइ। तेमुहाग। रवि व उगाइ फिरइ। ४०। नगर माहि अति थरइ कुचाट। एतान हीपहि मकुय मंजार
कापणउ मन माहि चिंतव्य रइ। कुंअर वरावाउ घम करइ। ४२। उतेतेमां विउमहाजन सह। कविकं हित
इनानामरूकांत के बइ उलम ब्यवहारो। ते हते जाइ सारी। ४३। हो सामस्फनते मां चीउ। ति जिका विर
कुमावाउ। पहिला आवइ घरण गसे ति। मयाजमणा हइ दे ति। ४४। सालिगामी पुनइ सुरदास। समरू साचउ
पुरइ आम। मामु समधर अतिहिं मदि जानुं तिहां करइ विणां। ४५। हे सुहरपानइ दरपाल। तांसुमावड तिवर
तेतकाल। हरपतिनइ हरदास सुवंगा हंकहामुतिहां करइ रंग। ४६। कामुके मव नइ कुंअर पाल। कुन्नुवका
सुमाग

१

नउ अति हिंदयाल। कान्हउ कर्मतुनइ कर्मसा। कहणउ आवइ तिहां उलसा। ४७। धारुधांधुतन णा
पाल। धरम णदांमइ अति हि रसाल। धारुधांधुनइ धर्मसा। धरणउ आवइ तिहां उलसा। ४८। तिहां तेमा वइफा
सीया सार। कणहल णतेवेचण हार। तेला तेला कहूतसंनाम। आवइ सवि तिहां मेहला काम। ४९। सुरुच
उपउ फाहू तु नाम। रुकुडउ सागउ आवइ काम। सिधु वीर साइ जेहां मुघुरामु तिहां तिक। ५०। चाचउचाह
उवदि लाते कि। आवतां तेन करइ जे कि। फोफलीयात फावइ सायवइ ते आवानइ रहां आवइ। ५१। सालू
उपालू उनइ सुहरुसा। आनुमानु नइ समसा। पुतुपाउ पेतु मा णि। नाइ उमाइ उते मी यांणि। ५२। वाकरवा
इक उरीज उमेह। जोवादे वा अति दिसनेह। सांगु मांगु राकुं नाम। लखु समसात ते आवइ ताम। ५३। आसकपासम
नइ परमसा। रूपउ वयरू आवइ हसा। नेसी ते कावइ। अतिसार। मइल तणउ बसुन हीपार। ५४। लखु समलां
रुइ ऊंता बला। बोलइ बोलसदा तील ला इ जिपरि मिलाउ मसाज नवक्रां। नाम लेइ नाके ताकइ। ५५। माहे
माहि पूछइ वात। एकक दिन ओगु रात। रायतणउ बेटउ बारियो। नां णे सी हरा निचारियु। ५६। आपणी वारि तण
किमरइ इ। एक वेला विमासा करइ। एककुविदि वइ बइ सी रहइ। एककहइ राजा नइ कहु। ५७। सहु विमासा
इ मान हइ हि अपार माहाजन कहाइ राय साधार। आसंणवइ सणवेइ मांन। बइठउ संहु इम आगलि ताम। ५
८। महाजन तेणमुणा यावयणां राइ मालि वकाणा नयण। कुणमा रइ कुण दुहवइ सम। तेहु कारण कहन
इ चदइ। ६। दुहा॥ महाजन तिहांइ मकहइ सुणि देउ व व्यालं। पुत्र तम्हारइ जे अवइ। तसु रुसुकमाल ह
नासिम वियरनाम हइ लइ काम। जमता हाम इ अति घणउ। कुंअर के किंता म। ६४। बेला जो मणन पांमाइ। बेला ना
बइ नारि स्वामि सुणउ एवानता। ति णि अमृ असुवरा राति। ६५। चउपई॥ तव बोलइ राजन मनिदसी। रावसुण
घइ तस पं वोगा प सा प। संप्रेकि उसंतो घासस्फा। हाला विता हर षिउ बइ। ६७। कुंअर तेमी राजा कहइ। क
रको दीनइ क उत इरहइ। नयर माहि निमाइ सिबाप। लोक इदसी उजनइ आप। ६८। कुंजे अरितें मांनिउ
सहा। वाका यातकिं सांन विकहा जे रबे रहइ आवास इमाहि। नापिते मजन आवइ ति जि वादि। ६९। तेह सिउ कु

2

ललतग
कुमार २

मरिमाफि पाति । रातिदिवस चालइ एक चीति । सुविसमाधि कुंअर रहइ । सजन मित्र आगलि सविकहइ ।१०
मावे मांहि अतिघण स्नेह । सुमति गहइ तिहां कवि लिखि तेह । राय सभाइ सामलइ घणी । दासी एक आवी तम
तणी ।११ सांणइ चंद्र मघ साथै मिलिइ । कुमरि कुदाली घीत मिलइ । सामिइं दासी बलतु सणाइ । कुंअर मि
लतिं तेहकुं सुणइ ।१२ न्याइं टालि उत्तमो कलतु । मुजइ एह वकु कामे कलतु । दासाइ तिहां सरस मनकु दिप कुं
अरनइ मनि रोस सछय यत ।१३ । दूहा ॥ मित्र सज्जण लिइ सकहइ । मारु दोसन कोइ । दासाइ उइ सकदिकु इ
घणला दरु कोइ ।१४ उत्तम तिहां कुंअर चिंतवइ । जो तुं देस विदेस । कर्मे परा सा रुं करा । बलामदि लउ आवे सि ।१५
कुमरिइं मविमासी उं । कंचाल उं परमाति सजन मित्र आगलि कहइ तुं आव सिंघाति ।१६ दसांत रउ सकल
रइ बइ मानरहइ कोइ । आदार हान इं कामर । कि मिउ । मित्र विचारी मोइ ।१७ मक रहिवा युग तुं नहीं । दिवस
इस मामा । तिहांदि मि जइनइं हरहि सु । मिदासे मित्र लहांम ।१८ मोमं मुहत दिवनां गामी बइसारहइ गाम
र । तेसामे अवूस उपाम इं इरवृतासार ।१९ जउ तुं हइ आण पियरि । उवइयइ सेसी धरि बइसां अनुबिंसर
इ । मिउ काजइं सहइदेसि ।२० नेस्यरि हिज अतिकलइ । ते हनइं परनव राति । कि सिउं कर इं सघरि
दासाइ चव रसपामि ।२१ पुरुष मला तेसामाहइ केऊ इं परदेस धन पामाय कुटमनइं सलोकिइं सविसेस
।२२ स्लोक । दासाइ विवदषु यं जांति कुइं सुमग हइ जण विसेसा । अपमान विचकिलिकइ । दिकि कुइं तेणपु
रुषाण ।२३ ईसविदेस हजोगला कुति गदासइ कोकि । आप समुहट राषई । मा णकइ अग्नि बोकि ।२४ पराम
वनस हइं पुरुष वते । जे सरस विचार । जिहां जय तिहां सुषलइ इ । पामइ पामइ मानत्रपार ।२५ चोई ये इसि उ
विमासी चाल्या नेयन्याय पितसकुं नदसां । पिलेअ चपल तुरंग मिचढि उ कुंअर सा थिइंला धासविठा थायार
।२६ सास्तकहनइ सरुआरि मोता पदिर इतिहां तिणि बारि । नाहइ । कंसरअति दिस ज्ञान परदेस दसाणि दिस
पीसणि ।२७ मात पिता नइ हति आण कहि । मित्रेकहु तेवाट इवइ इ । बात कर ता मार मि जाइ । सजन मित्र तेआगलि
थाइ ।२८ कुमरकुसगति तेहनीकरइ । रातिदिवसतारि सचरइ । रमइ लमइ सरसउंकथा । कोइ हैसे तर मनथ्रति
।२९ गामि गामि कौतुकइ आराम । मिस्र आति रूयकागाम । इणि परिजोइ कु तिग घणा जोइ अइइ देसंतर तणा ।
३०। बसु । कुमर इणि परि हइसं जो अति मात पिता थिरि पिर धीरा जा इहि । थिवते दुम्ब श्री थ सुमस घलेअ मेइ ।
लीकरी बिदेसा कमपरि चित्तसमाधि मधे आतर स्लिइं करइ नगणइ दिवस इराति । मित्रे मिसाथा तद्भक्ति ।२

तेमन लजवदाना णि चुपइ । इणि परि वाटइं जाता सोइ । कुमर कहइ धर्मि जयहोइ । पापिइं ।
क्षय थाई कहइ सही । मित्र सज्जण लिवा तद्कहइ । ते मा पितल तुं बोलइ इस । सिउं लाइ तइ एक कही
तूं किसिउं कुलयुग ग्रहइ महिमा आणि । इ कु अइइ धर्म इं निसरा णि ।३ । पापिकायाइ इणि
टोल कुंअर नमानइ तेह नु बोल । मांहोमांहि बाद दइ करइ । पण परि बेकुं बाटइं साचरइ ।३४ कु
अरति हांपा भीति कहा रुई जाइ जाइ मांहोमांहि दिन दा बुलिइ आवइ । पुरुष तेहनइ पुंछाइ ।
३५ ते तेलइ मिला तुंकु पडा । एकाति हनइं पुछइ करायथिबिक । मित्रेबेकं बात इकदी तेहति
हां नरहि उसामदा । थइ कलियुग सिरा बाबी लिउ तेह पापि जयन इं धर्मिईं छेद । इसा बात ति
णि पुर पिकदा । नापित कहइ तइं हारि उसही ।३७ । तिम संज्जलानइं चाल्याआगा । बोल्या को क
नइं आपाय तांम वाचा प्रविचल कुंअर सुं मांणबोल आपणउ थक रि उमांण ।३८ । हा । कुंअर
कदिइ सुणि मित्रेइं । इणि कहइं जेह कसा थि कइ । इणि रीकुल युग सुरि उएह ।३९ धर्मिजं
य घण पो सा इं धर्मि सविमु इदोर मित्र इसु णिइ कवात मानइ लिहइ इसमो इ ।४० पापिइ क्षयकु ।
पामाइ कणेको । तइ सक्रेक्रोय । नरपा मादि तो बुक्षसह । पापत णफल को इ ।४१ तुंबल तुं नापि
त नणइ एज्ञ ने जिनवात आंगइं तेह कहा राजइ जोन मान इं राता ।४२ उतिहां कुंअर रइ मकइ सु
णि जो मित्र सुआणि जुबला दारु कंसही तुम्आ पुरु के काण उइ सबइ तो नाइइं बइइ । पापइ आप
तो नोल । ग्राम मणलो कइ मिल्या । ते पुछी या नि टोल ।४४ न्याय मित बोलइ सपापी उ । ताणि तिहांसु
विचार । सज्जन मित्र इंइ मकदि । तइ हारि उते सारा ।४५ इम करता बाटइं ति हां कुंअर इहारि
उ सर्व । नाइं दिवकइं इरस तु आणइ बिमणउ गर्व । इवनइ तेउ माहरी सहु सांतलि यो सा
। जे इकु जाति इ उपुइइ तेह सुण अधिकार ।४६ दय कहु सापुरइ हारि या जंसरइ कुज
पायक । मिति तेहु रा बि लीमा आपणि थिउ नायक । नचोपइ । नापित राबिलि इंचा ।

तलतेग
कुमार

लीज मारगिकुअरपालहचालीज। बालंदकहइसां भलिहीबात। तइंतासहूइदारिखं
रातके। दिवडूकमानिकपनमाहरे। ३ सहूइआपूताहरे। कुअरकहइद्रमकहीसि
षहू। कुलचुगिसारषूटीलिनसहू। २०। कुलिचुगिसाचनबोलइकोय। सावकाबकहि
नेइनबिकोइ। कहिनमांदिइसहूइमावहेकरस्यूइ। कूहीसाषिजिसहूइसरइ। २१। पुण्य
पापफलअबइसंसारि। सुषसोगावइबइएकअपार। पुण्यकरइंमइहूजसदा। तासघ
रगाहिमइसंपदा। २२। इकपालषाइंसूइसइसार। एकबइतेजपाहणहार। तेहजिजिहा
जेनइंजसरस। सेवकमगचायेवाफिरइ। २३। इकदीसइदुषीससारि। पामइपरसेवतेहेअ
पार। दइइकरस्यहीनइयणजे। सोगवइजेतकरमअपणजे। २४। पापकरइबइअदिनखि
शि। तेहनइदिवकरेसिइछेह। नरकमांहिजावतेडुषसहइ। कुअरमित्रआगलिइमक
हइ। २५। नाइंकहइसंसलिकुंवार। बातकहूंतेहनेइंकसार। पुण्यकरउंधर्मायई। ते
देयरिलषिमाजुहइसदा। २६। जेजेसगासमरथमनिलाज। तेरनेकाइनसारइकाज। जेक
हअदलिशिबोलेति। तेहनीसहूइलाजकरेति। २७। कुलिचुद्दबडोमहिमाइसिजउजे
यहइतेधमंजिवसिजे। दीठउमारगिचालइजेह। किस्याकलंकचहइंसहीतेअ। २८। इ
मकहइरधर्मिइंइमकोइ। पापकरइसेहमइजअहोइ। पापीतेदेजिपवहीवहइ। इमीते
कुअतिरहवहइ। २९। स्यापितनाणसुणीयावयण। कुअरकहइइहारहनयण। सत्यवचन
जयकोबोलसिइ। देयदषीआरतेसहूवालेसिइ। ३०। पापीबोलवाल्याजेतलइ। मांहीवि
मिलीपातेतलइ। पुष्टेबातइंकारणिगमा। तेहकुलिचुगिसरिषापमा। ३१। तिमसांसली
नइंवाल्याजिसिइ। आगलिअटबीतिसिइ। तेअटबीमांहिचालाइंरेगि। बातकरइंमेइनम
नरंगि। ३२। चोरबरडेसाबिडतिणिवाट। नवनीफरणतणाआघाट। स्यापितकहिदिवइ ३

णिजुमित्र। मारीतइनविमानीवित्त। ३३। सस्यापिणिसरीयजसाथि। जुतीमेइनइआपिनअ
थि। तवकुयरदेयमंहुइआणि। काढीआपितवकुरीमपराणि। ३४। स्यापितभाविलेइचाल
उ। सहूअरतिकामेहलीउ। मित्रकुमित्रहइतिणपरियसु। कुअरवहनलिबइसीरहिउतु
३५। ढाल। राजदेश। कुअरअतिकुषदइधरइ। जइरत्नमझमजाशि। अथबिनिविलि
काणगयु। मुकमूकोनिसार। ३६। देव३नइमित्रकरिहे। किमभिलसियमाइबाप। आअबिनिविलि
दिनोगयु। मुकमूकोनिरधार। ३७। देव३नइ०। सरजनसादिअतिरोइ। कोइमराघणाभार। बाध
सिपवतरतणा। समकरशावहआपार। ३८। देव०। करमिकउइमनसरजाछे। उकिमहूटहणह
गमलहमणआगमइहजा। कमीनबूटातेह। ३९। देव०। नलदमयंतीरातिसम्पा। पुरबेकमी
बिसिसि। तिणिपरिमइहुपपामीचा। समतानेमलिदेसि। ४०। देव०। देयनइसादसआदरीन
शणिनिवारीमाद। तेतलइतिहारातिइपन्गा। मइबउत्रहतलिचीर। ४१। देव०। चडपई। साव
सदेयनइमरीइअपार। वहषकिजइबइठउकुमार। विवजरराति जिसिइलिशघडेजे
अरतणकानेअतिगई। ४२। तहूअरजपरिवीलइकोइ। कुमरिआणिजेसहीतलइडोइ
तेमोतलिवाकानइधरइ। ससमाजोमाहिवातहकरइ। ४३। जपरिसतदबीलइयणे। एकलिद
आविउपरस्तणे। तेहकहेइसांसलिमोसहू। कुतिगएकअपूरबकहू। ४४। नववारहीमम
रीलइएकयरिरहीमहअतिहिविवेक। बातबानोअतिआरोम। अमरावतीनगरीनेनाम
४५। चउगदांकुरासीसोहसा। जाणतणतिहांमनमोहति। बइइहरसमलतिहांवरतइंसारहा
मदीइसहूइअतिवार। ४६। अमरसेनतिहांकहीइराउ। अरीयणनेइमतसकिदिइधाउ
कमलजोचनारालीयजेनाम। विलोबनिरूपलषुतेनाम। ४७। सलाचनाबेटीअतिसारतेना
रूपसगुणनहीपार। हडाणीजाणेतेतिसी। जनोपमसोहइसरसतिसी। ४८। सोहइमसलं
किवेणीडंड। सेवनागजोणेपरचंड। कानेकुलकहइमलिविनुरात। सोमपयोधरअ 4

तिहिं रमालउ ३७ तेक मिलं किं अति दिं पालती दं तसो द दां मि मकु ली इ धरंग घवाल
सार देय हइ फल कइ अलोपम द्वार ४० रणकइ पाप नेतरी नाद कवि ज्ञाण को इनसाद।
निज नवला तेकरइ शृंगार पहिरइ फाली अति हिसफार ४१ गमसबक मि तणइ ज्ञा लिबंधि।
जनमल गइतेभरं औ चंधि राजा राणी अतिउ छ्व धरइ विविधि प्रकारि उछव करइ ४२ उछव
ज्ञावइ पहद निनाद चुरासी चकटे एह सादनयणाएह नाल हइ उदे निखुइ कुमरि पर
ण विसुतेद ४३ दाघमे दलोमणि दिउ अर्द राज जोइ अम्हा रू करि सिका जणह बूकुं
तिगउ जोई करी छिवन आविजे लति दांघू फिरी ४४ वह अस ततिहां बो लिउपभइ वेलि
एक ते दवह त लि अभइ तेहनुर सबेराहन यणजाइ तत रूणते देखतीपाइ ४५ इसि इ
बालकुमरिहं सासत्ना विस्मासणसघलीहिवट ली खलित गुरसनइ एणगच्छ कं अर
तवदेव गुपगु ४६ हरसतक सहरनय बोमीह कतिगउ जोइनइ आहो आबीइ कुमरि बेलिसु बं
धणोठि मत्तुर चडितेतवह नीषुंधि ४७ दहारित बहवालीगयु नगरनिवेशाद कई नइरदि
उ डीवामिसि वालीउ कुं आर पहद्तण उतिहांसु णिजविचार ४८ उ बिउपद कुं अर
तिणिवार आवीरायनइ करइ जुहार राजा कहइ अदो मधु रूपएइ अम्हरूटालितउ।
रका ४९ तिहां आणंद करइ कुआर परीय चिंबधावइ तिणि वारएहमांहि बइ हु मते हुं
एइ राजा हलासइ ठसु ए इ ५० बोलक हत्रुउ मनइ एक साचु पालेयापइ टबो चरसचो
लघुलि जलइ कु मरी हरिइ विति तलइ ५१ हरषवदन तिहां सकइ घय तु राजा तु मने ति
हगादिउ वरराज आपइ तिणि वारि परिणावइ नृप राज कुआरि ५२ ढाल बीबाद लोनी। लगनहेनो
पम थिरकरीए परणावइ एराजा कुंआरीए। चूरी गुहरतालीयाए वरमंद पिछिकं दिसे मोनी आए
५३ नछ वकइएनिवाए तिहां राजा नसवेम लिनो इ बाए ब त्रचामरत वरीरिघरइए तिहां
वेदी जणएक लिरिवे करइए ५४ देव रच हीयनइ आवीए। चुरीय मांहि पधराबीउ एबर

राम कुं अरि परिणा वीउ ए ५५ चउरंग सेन्या समोपीउं ए वरराज कुं लाषसोवन तिहां आपीउ ए इ
णिपरि परणीय कुंअरि उए तिहां कुंवरत णउकस विस्तरिउ ए ५६ संसार तणासुख तो गवइ ए तिहं
नारीयनइ केघ अतिगमइ गजगति नारीय चालती ए प्रीयसरिसिउ अनेद द्धचाह ताए ५७ दाव
वन वला करइ एतिम प्रीयत णउ मन भावइ ए सात मइ गुबिदि वीसमइ एतिहां सुबिदिक राइ
नना मइ ए ५८ वसुं कुमर चिंतइ श्री अमनमांहि आलोमइ हु पांमीउ राजऋद्धि सुखनइ
यपारह हिइ गगमइ अपायक तणउ अइराजसु षद्धि संसारइ सुष तो गवइ ससारउ ओ अहनिसि
कामनि कंत राति दिवस अंतरन विलइ इइलि परिअन विलसं ति ५९ ए चुउ राजा हपामीउ
कुं अरइ कांम सुष विलसइ अनेतुं नाम एस पासिमन रंगिइर मइ दीव इमित्र नगर मांहिस
मई ६० न्यापित नयण चनीउ जिसिइ मी लिवा नइ कुतरी उतिसि इ मित्र वेहु मिलीया सुवि
चार माहो मांहि करइ जुहार ६१ षेम कुशल पूछइ कुमार न्यापित कहइ आपण विचार
बोरद्ध मिलीया मजनइ साता हु अदषी आरनी धंतिणिरात ६२ श्री तिहां थिउनयरसाणा नीकां
लिउ ते तलइ इं आ वासमुज नइ मिलिउ मन मांहि चितइ कुं आर ५ मे विषो ण्यातणउ उपकार ६
३ लामाल लाउ अते रा ए६४ वस्त्र अनोपम आप्यां तेह कुं अरवि शेषि दिइ तिहां माना न्यापित
नुवलीया धिउ वान ६५ राजकुमाई ग्रुज सबाउ निज श्रराजा हुइ पसाउ सुषभो गवइ तिहां
दिन वेस जु मित्र बेहु मांहि अतिस्नेह ६६ पाइ णि परि बहु अदिवस गया किसिइ राजा न्यापित पूछइ ते
सिइ एउ हमनइ दिघण तेह स्वरू पकह आपण ६७ पापी इतिहां कहां उइ सितु परिणावी नइ
पूछइ स्यो विरसिघ राजासु विचार मो हरू नामललितांग कुमार ६८ मुझसाथ एइ कोटरी जोइवा
रमुइ सिइ नामि एहन दोइ एमुक पहिलु आहा आइ वीउ तइ तु बेटा परिणावी उ ६९ ६८ इहिं निणि परिया न
संधि राजा कहइ एमा रूं के धिमारह कुल बोलिइ निआम कोपि चढिउ बोलइ महाराज ७० एसा
पितक ही आबीउ आवासि राजापूछइ मंत्रीय पासि प्रधान कहिउ एतेमा विवा आवेउ कद्दी

5

ललितांग
कुमार ५

थ मारियो ७० राइर बीछ कुमर अपार रातिर बीतिमा बीछ कुंआर नारी पीव नई कहि तिहां बात न
दीजा बाहिर आणि राति ७१ मित्रमो कलु कुमरी करइ न्यायित तेहवे तेडन विलवइ तिहां कुंज
वीजाइ छिसिइ मारगि अथ बिछिमारि तेतिसिइ ७२ पापी नइ तिहां कुमइ मरुन थम इंद्र
कुमर नइ जोड कवीछ कुमर बिमासण धरी चालिउ सवेस जाईकरी ७३ ढाल राग आसा
उरी ॥ कुमरि राजकुंवार लजाणी चालिउ साहसधीरि कटक राजवीतवसजे करी नइ गोलानद
नइ तीरि ७४ मछि रिया आंगा जरस्थो जीण नइ पाछरी इके काण कुंअर सजाई करइ जोतलइरा
य नइ दकउ जाणि ७५ राइ कटक सवे मोकलीउ जई नइ मा नवदेहि रषे जीवतउ पदछि जाइमे
न सिछ माथे फिर ७६ दलवेदलि तिहां साहमा मिलीया बाजा गुहिर नीसाण ढमढोलढम
का हणहणीया केकाण ७७ भेरी भइ देमागुध लीधी फेमालइ तरुवारि कंबुरी सालाघण
जलक्या समरगणि तिणिवारि ७८ बिकम पवेतिहां रथरथ मठ्या सुभट करइ संजाई बखरी जा
णे बहु मिलीया सरसरो नइ जोवाई ७९ पदाबूरीय अछे इमाणीयाली मंकुरसोहइसार
सागी णि घण तिहां तीर बिछूट इणिपरि मकि कमार ८० मस्त गिधा लीटीप अनोपम सीमी
अति दिपन्त्री णि रणका कुलवा लीइ इणि अवसरि कायर जाइ प्राण ८१ मारि करताइक
धाइ काटीनइ करवाल भेटे कनक कनक कोटिक वाजइ एक दीइ तिहां फाल ८२ हाहाकार
करता कहिइ पडिरीय सयल सनाह आगो आगि फाटिक मेलइ इ वदइ रुधिर प्रवाह ८३ रा
यतणि कुणे तिहां हारि ते माबाइरि छिगति ८४ इराजा मीलि आवी सबल ते चेढि मां मंति
८५ पाय कि रथर थ अ तोषारि तो षार इणि परि तिहां उकुम नाए सबल सादीस ऐया
८६ पकुमरतणि सम अति दिरो मां ध्या मरवा नथरिषे मझ आंका अवलो कनेर आवइ ते
हमां वामर फकि इ८७ गयर हरथर इएक तणा ध कापण आगलि पकति तेह बा पानेइ आघा धाइ
इणिपरि ते विनकति ८८ जोरका पाथइ एक जमाफ फइ मार इतफ कारेस रिम फांषउ घाइ २

लेइ वरतइ हाहाकार ८९ एक बलानि तिहां बाछे आवइ जूझ अपार पावलिजो ता इएक नर तासइ
रकीघा बिछ घीयार ९० नरतणिगुणाइ वसरिव जावइ गाज कुंअर जेम कुं अर म वपाज बनाद लमिली
आ कुझइ इणि परि सम ९१ राय कटक लागसल ते लेबा बो ने मयलपाराण इण अवसरि तिहां कुंअरे आ
गलि साहकर इकोल्याणि ९२ ललितांग कुमर ते कुण अबे बेछिण करइ कइ बार रायप्रणि निलाड ते मां
पुछि तउ कुंअर बिचार ९३ बिरसिधुराजा अतिबलवंत समरथ अति दातार तासकुलि उअति छिसोमा
णी ललितांग कुमार ९४ राय बिछ कुंरी साथी चालिउ मित्र सहित परदेसि राइ जोवा अमेहमो कल्या आ
व्या आ णाइ देसि ९५ मी त्रीयसिवे तिहां राजा बोलइ राय पती सिल प्रणमि आवी इणि अवसरि बिकु
जाणकोधव मे ल ९६ चतपट्टी दूर बि राजामा कइ जगा नपरदे मोहिक रावइ जगा परथरित लीयातो
रण बहु रायजा माई मिलीने सहु ९७ गामि गूनी कबली ढोल दमामा बाया बली ठल इच मर सिरि
रीइछत्र आगलि ना चइ अनोपम पात्र ९८ इणि परिराज सुत निसंचर इबिविधपुकारि ते छाव करइ
सदइ नइ देई बहु मांन पुकचा पाक जाणि पामि ९९ तेहे जइ बीन छि तनी रिदं निसुणी रायहूं ते
आणंद मीत्रि तेम बावे ही बीया बमहीया णि तिहां आबीया १०० दिइ कुं अरस बि कहि नइ मान
रंगि आपइ फोफल पान कुं अरी नइ तिहां आणे करी चालिउ कुंअर कुलवट धरि १०१ अमरसेन
बुला वइ राय कुमार नइ कंक रस पसाय सीम बुला बी राजा रहि कुंअर कटक आघु बहइ
७ कजोणी आबी न कुंअर राजाय छबक र इपा छेर ३ कुंअर नइ मनि हरष अपार मा
ता नइ जइ किथी जुहार करजो मी नइ कसच रहइ आषइ अराज अमर माता कहइ ४ बहू
रंगी गी सासु पाय बेतिआ सासइ दाइ ति हां मायं हरषि राजा आपइ राज दीक्षा लाधी तिहां मनराय
जिपपाला वृत पइ लो लोके सुख पाम अदि जो कि दान शील तपसा वनवइ राजा ना बिया
नइ ते वह अति धन सिज उ रुन समाण बबाण दिअनइ वरुइ अति हि सुखी जा दिइ पनेहे घणपाल इरी लि
पुण्य पसाइ करइ तिहां लीला ७ रायन इबेट हइ कउ नाम पुण्य सेन कुंअर वुं नाम पुत्रि जनि मन दीव वको
थ यां चाजा नइ तिहां दानदवीध ८ राजा हूं तउ ललितांग कुमार एह प्रति कउ सुविचार राजाधर्म

6

ललितांग कुमारह

२

करइति श्रेयणि । कुल आचार पालइ आपणि ॥ १९ ॥ वइरी रसन गिरूआ संसारि । राज्य पालइ तेह सुबिचा
रि । धर्मध्यान सुं रत्तो विचरइ । जिनपूजा आवश्यक मन करइ ॥ २० ॥ बेटा नइं तिहां राज दिदीध । श्रीगुरु सइं ह
थि चारित्र लीध । श्रीमुनिप्रभ सूरीसर पासि । पालइ संयम मन निउल्लासि ॥ २१ ॥ क्रोध लोभ माया परिहरइ । अं
गि शुभ भावना नवि करइ । पालइ संयम कमगच्छ धार । मेहलइ मद मच्छर अहंकार ॥ २२ ॥ पंचमहाव्रत अंगि वहइ
परीसहा आगमि विसहइ । ईर्यासुमति चालइ सोधतु । सावीयाणा मन अति मोहतु ॥ २३ ॥ संघ प्रति इं उ
पदिन पदेस टालइ मनना सयल कलेश । गामि नगर पुरि विहार करइ । सयल संघना संशय ह
रइ ॥ २४ ॥ क्षपक श्रेणि चडी मोह क्षय गुणवंत । कर्म सवि कनु आणी अंत । निर्मल ज्ञान तिहां उपनु केवल पा
मी शिवपुरि गया ॥ २५ ॥ ए ललितांग कुमर सुचरी । मइं कही ए अविवेक करी । धर्म हरूप ए हच रित्र ।
सांभलतां न हुइ कोण पवित्र ॥ २६ ॥ धर्मि पामीजइ सही राज । धर्मि सीझइ वंछित काज । धर्म पसाइं रूडी
ऋद्धि लहइ । धर्मिइं लक्ष्मी घरि बहु मिलइ ॥ २७ ॥ धर्म पसाइं वंछित सिद्धि । धर्मिइं पामीजइ नव निधि ।
धर्म तणउ महिमा बहु घणउ ते । कवि किम कहइ सावि सहइ सणउ ॥ २८ ॥ हुं अनजाण कांइ मूलि । सयल लोक बोध
एनी पगधूलि । अविक्रुज उ कहीत जेह । खमावउ कर जोडी बिहं ॥ २९ ॥ संमत १५ पनर त्रइ पन्न सार
वदि साइ वालणउ शनिबार । इग्यारसि दिनि चोत्रइ । संसार समुद्र सूरी हूइ ॥ ३० ॥ आगम गच्छ
वइ सुविचारि श्री अमररयण सूरीसर सार । तास पटोधर अति गुणवंत । श्री सोमरत्न सूरि जय
वंत ॥ ३१ ॥ सबी श्रमण श्रीदिन शिवदइ जेह । रिद्धि अनती पामइ तेह । तस पंकित कल्याण हराज तस
मुषि सेटि सीझइ काज ॥ ३२ ॥ कद्दलपुरि जगी कहीर सार । तिवसइ श्रावक तिहां सुविचार । च
इ प्रत जिन तणइ पसाइं । अलीय विघन जा बिहु रिपलाइ ॥ ३३ ॥ सणइ गुणइ अहिनसि ससव
इ पापय कलश बिहुरि हंटलइ । हमा कलस मुनि कहइ सुविचार । तिउ नितु तेह घरि उ मउरापक
२२४ ॥ इति श्री ललितांग कुमार धर्म परविल रत्तिर अविहंके मि त्रसस्नेह वचनयुति पा
लक लली ताग कुमार रास संपूर्णः ॥ लिखत श्री ... श्री १०८ गणि ... म दामोटा सत्या ...
सिक्षा पाणा सहित ... श्री श्री १० पगुला बी ... को बेला रतन ... १८ धपक मास ... बा

रवि वार मा ल पुर मध्ये लिखापिता

६